Kathak

KUMKUM DHAR, a well-known exponent of Lucknow Kathak in exotic Moghul costume for an item of Darbari or courtly Kathak (Lucknow)

कथक

KATHAK

THE MAGNIFICENT CONTRIBUTION OF UTTAR PRADESH

Uttar Pradesh, the heartland of this vast sub-continent has enriched many aspects of Indian culture and arts. Kathak is the magnificent contribution of this region to the rich storehouse of India's classical dances. The earliest reference to this art is in the *"Aadiparva"* of the *"Mahabharata"* which points to its antiquity. U.P., the sacred birthplace of Sri Rama and Sri Krishna and of great saints, poets, and musicians, has been a culturally fertile land where several varieties of dances throve, such as RAMLEELA the *RASLEELAS* of Brajbhumi, and many folk-dances. Perhaps the roots of Kathak lay in these *RASLEELAS* in which dance-groups known as *RAASMANDALIS* performed episodes from the *"BHAGAVAT PURANA"* depicting the spiritual union of the Gopis (milkmaids of Brindavan) with their Divine Beloved Krishna. Indian dance has been aptly described as "the expression of all the souls which are in torment or ecstacy about the separation of man from God, or Radha from Krishna".

"KATHAK" derives its name from the *"KATHIKAS"* or professional story-tellers who chanted stanzas from the "*Ramayana*" and "*Mahabharata*" with mime and dance movements to the accompaniment of "*Keertans*", "*Dhruvpads*" etc, all of which formed part of the daily rituals of worship in temples.

Later on, tempting rewards of wealth and costly gifts lured these *Kathikas* away into the magnificent royal darbars where the pleasure-loving Nawab-Wazirs of Awadh were generous patrons. Thus two distinct types of Kathak flourished. In *TEMPLE KATHAK,* the "Radha-Krishna & Gopis" theme dominates; there is an element of *bhakti* mixed with love, and the costumes are purely Indian (*lahanga-dupatta choli* etc). In the hedonistic Awadh Darbar, Kathak acquired elements of amazing sensuous appeal and a dazzling exotic style characterised by subtle virtuoso footwork, eloquent miming, liquid plastic movements, graceful poses, and dazzling whirls ("*chakkars*"). "*Darbari Kathak*" achieved alluring and

exotic elements by adopting Persian costumes and ornaments, and Persian terms like "*Aaamad*", "*Thaat*", "*Salaami*", "*Tarana*" and so on,. The seeds of the "*Lucknow School of Kathak*" were *sown when Prakashji, a kathak from Handia* (near Allahabad) became a dancer in the Court of Nawab Asaf-ud-Daula of Lucknow. The golden era of courtly Kathak was under the last Nawab, Wajid Ali Shah who was an accomplished and creative dancer, musician, and choreographer. Inspired by the *RASLEELAS* of Brindavan, he created his own Persianised versions of *RAHAS* which were really Kathak operas. He held his Kathak guru Thakur Prasad in highest esteem. *"Lucknow Kathak "* attained the peak of its glory under Thakur Prasad's brilliant nephews, the famous *Kalka-Binda* brothers (Maharaj Bindadin and Maharaj Kalka Prasad). Their art was enriched and popularised by the three sons of Kalka-namely Achchan Maharaj (father of Birju Maharaj) Shambhu Maharaj (father of Krishna Mohan & Ram Mohan Misras), and Lachchu Maharaj. They dominated the Kathak scene for many decades. They have left a vast "*shishya-parampara*" (long lines of pupils) all over the world. The prime legatee of their heritage today is the world-renowned and remarkably versatile and creative performer-cum-guru *BIRJU MAHARAJ.* He is also a repository of hundreds of lilting compositions by Bindadin who enriched the expressional aspect of Kathak for ever. Another School of Kathak which has won equal popularity is *JAIPUR KATHAK* nurtured under the rulers of Rajasthan. Both Schools have produced countless young and talented dancers. Kathak which was a Solo dance until a few decades ago, has now mesmerised audiences all over the world through magnificent dance dramas thanks to the genius of talented choreographers like Madam Menaka, Ramgopal, Kumudini Lakhia, Birju Maharaj, Maya Rao, Rohini Bhate, Vijay Shankar, Munna Shukla, *Baswati* Sen and others.

Based on "*The Natya Shastra*", Kathak covers all 3 aspects:-

NRITTA (pure dance); *NRITYA* (expressional aspect); & *NATYA* (dramatic element). But Kathak is quite different from other classical dances in music & style. The most striking thing about Kathak in comparison with other classical styles is the impression of extreme subtlety that it creates. "*Like a Japanese painting, Kathak is executed swiftly and with economy of line*". It retains the qualities

of grace & courtliness together with an emphasis on the beauty and intricacies of footwork; *TATKAAR* (complicated and speedy footwork) often in competition with the expert tabla accompanist, brings many rounds of applause from the audiences. Tabla, Pakhawaj, Harmonium, Sitar, Flute, Sarod and Sarangi are used for accompaniment besides a well-trained vocalist. If the dancer himself or herself is a good singer, the singing adds immensely to the impression in the "abhinaya" item. A Kathak recital (solo) always progresses from a very slow speed at the outset to a gradually accelerated pace; so there are various stages of Nritta. "*Aamad*" and "*Salaami*" or "*Thaat*" are done in a slow speed with subtle grace. "*Natwari*", "*Paramelu*", "*Paran*", "*Kramalaya*", "*Tode*", "*Tukde*" etc are various technical aspects of pure dance in various speeds. "*Padhant*" is when the dancer himself or herself recites the *bols* to be danced, so that the audience can follow them when reproduced by the dancer through his *ghunghroos* (ankle-bells). "*Gats*" provide scope for the dancer to reveal her skill in mime. In *Gat-bhava*, the dancer takes up a theme or an episode and interprets it beautifully in a variety of ways. Interpretations of *Nayikas* (heroines) in various moods of love, separation and reunion form very interesting items.

In spite of the excessively ornate super structure of alien cultures, the core of Kathak remains truly traditional and Indian as ever. This is unique feature of Kathak.

SUSHEELA MISRA

Kathak Dancers in Hindu Costumes

कथक

उत्तर प्रदेश का महान योगदान

इस विशाल उप-महाद्वीप के हृदय प्रदेश- उत्तर प्रदेश-ने भारतीय कला एवं संस्कृति के अनेक पक्षों को सुसम्पन्न किया है। भारत की समृद्ध शास्त्रीय नृत्य परम्परा को कथक इसी प्रदेश की शानदार देन है। इस कला का सर्वप्रथम उल्लेख हमें '*महाभारत*' के '*आदि पर्व*' में मिलता है जिससे इस नृत्य की अति प्राचीनता का बोध होता है। श्री राम तथा श्री कृष्ण की पावन जन्म स्थली, उत्तर प्रदेश की धरती सांस्कृतिक रूप से अति उर्वर रही है जहाँ महान सन्तों, कवियों, संगीतज्ञों का आर्विर्भाव हुआ है। यहाँ नृत्य की विविध शैलियाँ पनपी और फली फूली हैं, उदाहरणार्थ "रामलीला", ब्रजभूमि की *रास लीला*, और अनेक प्रकार के लोक-नृत्य। कथक-नृत्य का उद्‌भव संभवतः इन्हीं "रासलीलाओं" के द्वारा हुआ होगा। इन रासलीलाओं में नृत्यमंडलियाँ जिन्हें " *रास-मंडली*" 'कहा जाता है; 'भागवत-पुराण' से गोपियों तथा उनके प्रेमी भगवान कृष्ण के आध्यात्मिक मिलन के अनेकों उपाख्यान प्रस्तुत करतीं थी। भारतीय नृत्य को बड़े सटीक ढ़ंग से इस प्रकार वर्णित किया गया है कि " यह जीव के परमात्मा से या राधा के कृष्ण से विछोह द्वारा उत्पन्न यंत्रण या भावोन्माद की सार्वभौमिक अभिव्यक्ति है जिसे प्रत्येक मानव मन अनुभूत करता है।"

'*कथक*' शब्द की व्युत्पत्ति 'कथिक' से हुई है। *कथिक* व्यावसायिक *कथा-वाचक* हुआ करते थे। ये 'रामायण' तथा 'महाभारत' की उपकथाओं को "कीर्तन" और "ध्रुवपद" गायन के साथ मूक अभिनय तथा नृत्य के रूप में प्रस्तुत करते थे। ये कार्यक्रम मंदिरों में दैनिक धार्मिक कृत्य या अनुष्ठान के रूप में प्रचलित थे।

बाद में ये "*कथिक*", धन और बहुमूल्य पारितोषिकों के लोभ में अवध के शाही दरबारों में चले गये जहाँ भोग विलास में लिप्त नवाब व वज़ीरों ने उन्हें उदार संरक्षण प्रदान किया। इस प्रकार कथक की दो सुस्पष्ट शैलियाँ एक साथ पनपने लगीं। मंदिर में प्रस्तुत होने वाले कथक में राधा कृष्ण और गोपियों की लीलाओं की प्रमुखता थी।

इन कथक नृत्यों में भक्ति व प्रेम का समन्वित रूप प्रस्तुत होता था। इनमें प्रयुक्त वेशभूषा विशुद्ध रूप से भारतीय होती थी, जैसे लहँगा, दुपट्टा, चोली आदि। अवध के विलासी दरबार में कथक पर दूसरा ही रंग चढ़ने लगा। उसमें यौन अथवा ऐन्द्रिक आकर्षण, चकाचौंध करने वाली विदेशी शैली, सूक्ष्म कलात्मक पद संचालन (तत्कार), अर्थपूर्ण मूक

अभिनय, तरल लचीले अंग-विन्यास, मोहक भावभंगिमाएं और विस्मित कर देने वाले चक्करों का समावेश हुआ। अन्य आकर्षणों के रूप में दरबारी कथक में फारसी लिबास के साथ साथ फ़ारसी शब्दों को भी प्रवेश मिला, जैसे, 'आमद', 'ठाठ', 'सलामी' 'तराना' इत्यादि।

"*लखनऊ घराने*" के कथक का बीजारोपण उस समय हुआ जब इलाहाबाद के निकट हँडिया नामक स्थान के कथक नर्तक **प्रकाश जी** अवध के **नवाब आसुफ-उद्-दौला** के दरबार के नर्तक हो गये। लखनऊ के अंतिम **नवाब वाज़िद अली शाह** स्वयं एक प्रवीण और सृजनशील नर्तक होने के साथ संगीत और नृत्य कला में पारंगत था। वृन्दावन की रासलीलाओं से प्रेरित होकर उन्होंने स्वयं उनके फ़ारसी संस्करण रचे "रहस" जिनका स्वरूप वस्तुतः कथक-नृत्य नाटिका का था। वाज़िद अलीशाह अपने कथक गुरू ठाकुर प्रसाद का बड़ा आदर करते थे। ठाकुरप्रसाद के प्रतिभा सम्पन्न भतीजों, महाराज बिन्दादीन तथा महाराज कालिका प्रसाद, (कालिका-बिन्दा भ्राता युगल) के समय लखनऊ-कथक उत्कर्ष के शिखर पर पहुँच गया।

कालिका-बिन्दा की कला को और अधिक निखारने और लोक प्रिय बनाने में कालिका महाराज के तीन पुत्रों का विशेष योगदान है-अच्छन महाराज (बिरजू महाराज के पिता), शम्भू महाराज (कृष्ण मोहन और राममोहन मिश्र के पिता) तथा लच्छू महाराज। ये तीनों भाई कथक क्षेत्र में कई दशकों तक छाये रहे। अन्होंने विश्व स्तर पर एक विशाल शिष्य-परम्परा का सूत्रपात किया जो अभी तक फल फूल रही है। इस महान विरासत के महान उत्तराधिकारी है विश्व विख्यात, बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी सृजनशील नर्तक तथा प्रकाण्ड गुरू श्री बिरजू महाराज। आपके पास बिन्दादीन महाराज की सैकड़ों भावपूर्ण रचनाओं का भंडार है। इन रचनाओं ने कथक के अभिनय पक्ष को सदा के लिए सम्पन्न कर दिया है।

कथक का दूसरा घराना जिसने समान लोक प्रियता अर्जित की- वह "जयपुर कथक" है, जिसे राजस्थान के राजाश्रय में फलने फूलने का अवसर मिला। नृत्य के दोनों घरानों ने असंख्य प्रतिभावान नर्तकों और नृत्यांगनाओं को जन्म दिया है। कथक जो, कुछ दशकों पूर्व मात्र एकल नृत्य के रूप में प्रतिष्ठत था अब दर्शकों को नृत्य नाटिकाओं के रूप में मंत्रमुग्ध कर रहा है। इस सफलता का श्रेय नृत्य कला में पारंगत प्रतिभाओं को जाता है जिनमें प्रमुख हैं मेडम मेनका, रामगोपाल, कुमुदिनी लाखिया, बिरजू महाराज, माया राव, रोहिनी भाटे, विजय शंकर, मुन्ना शुक्ल, वास्वती सेन आदि।

"*नाट्यशास्त्र*" पर आधारित होने के नाते कथक में सभी तीन अंग समाविष्ट हैं: **नृत्त** (शुद्ध नृत्य), **नृत्य** (अभिव्यंजक पक्ष) और **नाट्य** (नाटक तत्व)। परन्तु संगीत और शैली की दृष्टि से कथक शास्त्रीय नृत्य अन्य प्रकारों से बिल्कुल भिन्न है। शास्त्रीय नृत्य की अन्य शैलियों से कथक की तुलना करने पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण अन्तर जो उभर कर आता है वह कथक की अत्यधिक सूक्ष्मता व बारीकी

का भाव है। जापानी चित्र कला के समान कथक के रूप को अति त्वरित गति और रेखाओं की मितव्यता के द्वारा अवतरित करना पड़ता है। उसमें मृदुता और दरबारी सुसभ्यता के साथ सौंदर्य ओर जटिल पदसंचालन पर अत्यधिक बल दिया जाता है। ततकार में कुशल तबला वादक के साथ प्रतियोगिता छिड़ जाती है जिसे बार बार हर्षध्वनि द्वारा दर्शक बड़े आन्नद से सराहते हैं। कुशल तथा प्रशिक्षित गायक की संगति में तबला, परवावज, हारमोनियम, सितार, बाँसुरी, सरोद, सारंगी आदि वाद्य बजाये जाते हैं। यदि नर्तक स्वयं गायक या गायिका होती है तो गायन द्वारा अभिनय अंग में चार चाँद लग जाते हैं। कथक की एकल प्रस्तुति अति विलम्बित लय से प्रारंभ होकर शनैःशनैः द्रुत लय की ओर अग्रसर होती है। अस्तु नृत्त के विभिन्न चरण होते है। 'आमद' और 'सलामी' या 'ठाठ' विलम्बित लय में बड़े मृदु अंदाज या 'नज़ाकत' के साथ प्रस्तुत किये जाते हैं। 'नटवरी', 'परमेलु' 'परन', 'क्रमालय', 'तोड़े', 'टुकड़े' आदि विभिन्न गतियों में विकसित होने वाले नृत्य के विभिन्न पारिभाषिक पहलू होते हैं। 'पढ़न्त' में नर्तक स्वयं नृत्य के बोलों को उच्चारित करता है। जब नर्तक उन बोलों को अपने घुंघरुओं से मुखरित करता है तो श्रोतागण उन बोलों का अनुसरण करते हैं। 'गत-भाव' में नर्तक किसी विषय या घटना को चुन लेता है और उसके विभिन्न रूपों या स्थितियों को बड़ी सुन्दरता से व्याख्यायित करता है। नायिकाओं द्वारा प्रेम, मिलन, विरह, पुनर्मिलन की स्थितियाँ बड़े मोहक रूप से प्रस्तुत व व्याख्यायित की जाती हैं।

यद्यपि कथक पर अति-अलंकरण और विदेशी संस्कृति का आरोपण हुआ है, कथक अपने मूल रूप में सदैव की तरह पारम्परिक एवं भारतीय है। यही कथक की अपनी विशिष्ठता है।

सुशीला मिश्रा

छायाचित्र : **राकेश सिन्हा**
हिन्दी अनुवाद : **ओम प्रकाश दीक्षित**

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. के लिये निदेशक भारतेन्दु नाट्य अकादमी ए-2/58, गोमतीनगर लखनऊ द्वारा प्रकाशित एवम् **शिवम आर्ट्स** 211, निशातगंज, लखनऊ दूरभाष-386389 द्वारा मुद्रित।